राष्ट्रभाषा हिन्दी का मानकीकरण

अरविन्द कुमार उपाध्याय 'बिन्दू',
इलाहाबाद।

अनेकरूपता में एक रूपता का निर्धारण ही मानकीकरण है। कई भाषा रूपों में से किसी एक को चुनकर फिर उसे शेष भाषा रूपों के वक्ताओं द्वारा स्वीकार बनाना ही मानकीकरण है। यदि कोई भाषा रूप शेष भाषा रूपों द्वारा स्वीकृत होता है तो क्रमशः उसकी क्षेत्रीय विशेषताएं निरस्त होने लगती है और वह बहुक्षेत्रीय होने के लिए अपने को विविध अभिव्यंजना क्षमता से लैस करना शुरू करती है ताकि वह बहुक्षेत्रीय सम्प्रेषणीयता के योग्य बन सको खड़ी बोली को केन्द्र में रखकर हिन्दी के मानकीकरण का सिलसिला शुरू होता है।

आज मानक भाषा हिन्दी में खड़ी बोली की क्षेत्रीय विशेषताएं लगभग निरस्त हो चुकी हैं। वह खड़ीबोली से उतनी ही भिन्न है जितनी की अवधी तथा ब्रज भाषा से। कोई भी भाषा मानक भाषा बनते ही संरचनात्मक एकरूपता और प्रयोगगत विविधता की परस्पर विरोधी प्रवृतियों से युक्त हो जाती है। चूंकि हिन्दी बहुत बड़े क्षेत्र में बोली जाती है इसलिए उसमें संरचनापरक एकता लाने की जरूरत है। यह कार्य-व्याकरण के द्वारा ही सम्भव है, लेकिन इसकी दूसरी ओर हिन्दी को विभिन्न प्रयुक्तियों में इस्तेमाल करने के लिए इसे प्रयोगगत वैविध्य से भी सम्पन्न करने की जरूरत है। किसी भी मानक भाषा की प्रकायत्मिक विविधता का मुद्दा आधुनिकीकरण से जुड़ा हुआ है, जबकि संरचनात्मक एकरूपता का मुद्दा व्याकरण कोष से जुड़ा हुआ है। यदि हम संरचनात्मक एकरूपता लाते हैं तो सम्भव है प्रयोगगत विविधता खण्डित हो जायें और यदि हम प्रयोगगत विविधता लाते हैं तो सम्भव है संरचनात्मक एकरूपता छिन्न-भिन्न हो जाये। मानकभाषा के

लिए दोनों जरूरी हैं और इन दोनों को बनाये रखने के लिए सतत लचीलेपन और बौद्धिकीकरण का सिद्धांत अपेक्षित है।

किसी भी मानक भाषा का आदर्श रूप यह है कि उसमें प्रत्येक शब्द का एक ही उच्चारण, एक ही अर्थ, उसका एक ही वर्तनीगत रूप और प्रत्येक कथन का अपवाद रहित एक ही ढ़ांचा, यह स्थिति किसी भी भाषा के लिए सम्भव नहीं है। कोई भी जीवित भाषा इतनी स्थिर एवं जड़ नहीं होती, फिर भी इस आदर्श मानक स्थिति तक भाषा को ले जाने के लिये प्रयास किये जाना चाहिए, भले ही लक्ष्य को प्राप्त करे या नहीं।

लेखन से भाषा के मानकीकरण का बड़ा गहरा सम्बन्ध होता है क्योंकि लेखन के जरिये भाषाई अनेक रूपताएं उभरती हैं और लेखन द्वारा ही उन अनेकरूपताओं में एकरूपता लाई गई है। भाषा विद्वानों के अनुसार कोई भी भाषा चार चरणों में अपने मानक रूप से प्राप्त करती है। प्रथम चरण में लोकगीतों तथा लोककलाओं की रचना होती है। दूसरे चरण में सामान्य गीत और फिर गम्भीर काव्य का प्रवर्तन होता है। तीसरे चरण में सामान्य गद्य और फिर गम्भीर गद्य लिख जाता है। चौथे चरण में मौलिक वैज्ञानिक साहित्य का प्रवर्तन होता है। हिन्दी तीन चरणों को पार करके चौथे चरण में दस्तक दे चुकी है। छिटपुट इसमें मौलिक वैज्ञानिक साहित्य का भी लेखन हो रहा है। गम्भीर मौलिक वैज्ञानिक साहित्य लेखन के लिए इसे और प्रतीक्षा करनी होगी।

भाषा विद्वानों ने मानकीकरण की चार अवस्थाएं बताई है। चुनाव, संसक्ति, प्रयोग तथा स्वीकृति। हिन्दी इन चारों अवस्थाओं से गुजर चुकी है, लेकिन फिर भी उसमें अनिश्चिता तथा अनेकरूपता बनी हुई है। आज

आवश्यकता है कि विभिन्न व्यक्तियों तथा संस्थाओं द्वारा किये गये मानकीकरण के प्रयास की समीक्षा कर उसमें एकरूपता लाई जाये। देश की शिक्षा-नीति तथा भाषा नीति को स्थिर करके ही हम अपनी राजभाषा हिन्दी के मानकीकरण का ठोस प्रयास कर सकते हैं। मानकीकरण तो किसी के द्वारा किया जा सकता है, लेकिन उसे स्वीकार बनाना सरकारी पहल द्वारा ही संभव है। हिन्दी के मानकीकरण के लिए (उच्चारण, वर्तनी, शब्द-सम्पदा और व्याकरण) चार क्षेत्रों में निम्नलिखित तरीके से सुधार किया जा सकता है।

उच्चारण-

मानक भाषा के प्रत्येक शब्द का सर्वत्र एक ही उच्चारण होना चाहिए। हिन्दी एक बहुक्षेत्रीय भाषा है। इसके एक शब्द का उच्चारण भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न है। इस भिन्नता में अभिन्नता लाने की जरूरत है ताकि एक शब्द का सर्वत्र एक ही उच्चारण किया जा सके। यथा-

प्रचलित रूप	**प्रस्तावित रूप**
दुकान, दूकान	दुकान
बहन, बहिन	बहन
ब्राह्मण, ब्रह्मण	ब्राह्मण
कहना, केहना	कहना

वर्तनी-

देवनागरी में वर्तनी को लेकर कई समस्याएं हैं, जैसे- हलन्त की समस्या, य श्रुति की समस्या, योजक चिन्ह की समस्या। जैसे- कीजिए/कीजिए,

किये/किए। मूलांश के साथ जोड़कर प्रत्यय की समस्या, हिन्दी के लिखित रूप को मानक बनाने के लिए उसकी वर्तनी गत अनेकरूपता को खत्म करने की जरूरत है। निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं-

- हलन्त का प्रयोग यथावत किया जाना चाहिए।
- अनुस्वार एवं अनुनासिकता को अलग-अलग मान्यता मिलनी चाहिए।
- रेफ के नीचे द्वित्वहीनता की स्थिति को स्वीकार किया जाना चाहिए। जैसे सूर्य्य को सूर्य लिखना चाहिए।
- समास में कहीं भी योजक चिन्ह का प्रयोग न किया जाये। (कर्मधारय एवं छन्द समास को छोड़कर)
- सामान्य भूत एक वचन का अभिन्न स्वरान्त धातुओं के रूपों एवं ह्रस्वीकरण एवं दीर्घ इकारान्त संज्ञाओं के बहुवचन रूपों को छोड़कर क्रिया, संज्ञा, विशेषण में कहीं भी य-श्रुति का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

शब्द सम्पदा-

हिन्दी क्षेत्र में व्यापकता के कारण एक ही वस्तु या भाव के लिए विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग भाव प्रचलित हैं। इससे अन्तर-क्षेत्रीय संवाद में दिक्कत पेश आती है। हिन्दी की मानक स्थिति तभी बनेगी जब एक वस्तु या भाव के लिए एक ही शब्द सर्वत्र प्रचलित हो।

प्रचलित रूप	**प्रस्तावित रूप**
मौजा, जुराब	मौजा
मायका, नैहर	मायका
दादा, बाबा	दादा

नेनुआ, धिंवड़ा, तरोई	नेनुआ

पारिभाषिक शब्द

हिन्दी की प्रकार्यात्मक विविधता के लिए पारिभाषिक शब्दों की अत्यन्त आवश्यकता है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय एवं शब्दावली आयोग ने एक-एक अंग्रेजी पारभाषिक शब्द के लिए कई-कई हिन्दी प्रतिरूप तैयार किये, इन्हें प्रयोग में छोड़ा भी गया है। अब जरूरी है इन हिन्दी प्रतिरूपों के प्रयोग का सर्वेक्षण कराकर जो बहुत प्रचलित और बहुत युक्त प्रतिरूप हैं, उसे चुना जाये और अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द के लिए उसे रूढ़ किया जाये। ऐसा नहीं करने के कारण ही पारिभाषिक शब्दों को लेकर के अनेकरूपता बनी हुई है।

प्रचलित रूप	**प्रस्तावित रूप**
प्रारूप, मसौदा	मसौदा
अलिखित, मौखिक, जबानी	मौखिक
नकद-पूंजी, तरल पूंजी	नकद पूंजी

व्याकरणः

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती के माध्यम से हिन्दी को संरचनात्मक एकरूपता देने की कोशिश की थी। उन्होंने प्रयोग को ही प्रमाण मानकर हिन्दी के अपवाह युक्त कथनों को अपवाद-मुक्त करने का प्रयास किया। बावजूद इसके जो थोडी बहुत दूरियां रह गई थी, उन्हें कामता प्रसाद गुरू के व्याकरण की अनुशंसाओं के आधार पर दूर कर दिया गया। कामता प्रसाद गुरू ने जिन विवादास्पद प्रयोगों पर कोई व्यवहारिक व्यवस्था नहीं दी, वहां आचार्य

किशोरीदास वाजपेयी की व्यवस्था को प्रमाण माना गया। गुरू जी के हिन्दी व्याकरण और वाजपेयी के शब्दानुशासन के कारण आज हिन्दी संरचनात्मक दृष्टि से एक कसी हुई भाषा है, लेकिन क्षेत्रीय वैविध्य के कारण तथा बहुस्तरीय वक्ताओं के कारण हिन्दी के व्याकरणिक रूपों में आज अनेकता देखी जाती है। इन्हें दूर करने की जरूरत है।

प्रचलित रूप	**प्रस्तावित रूप**
मुझे, मुझको, मेरे को	मुझे, मुझको
हूँगा, होऊँगा	होऊँगा
बशर्ते, बशर्ते कि	बशर्ते
राम को लड़का हुआ है, राम के लड़का हुआ।	राम के लड़का हुआ है

हिन्दी एक बहु क्षेत्रीय भाषा है। इसमें बोलने वाले बहुस्तरीय हैं और इसका प्रयोग बहुआयामी है। ऐसी स्थिति में उच्चारण वर्तनी, शब्द-सम्पदा और व्याकरण सभी क्षेत्रों में हिन्दी के मानक रूप को प्राप्त करना चुनौती भरा है। यदि इसके मानक रूप को हम संरचनात्मक स्तर पर भी पा लेते हैं तो प्रयोगगत वैविध्य को लेकर हिन्दी के सामने खतरे पैदा हो सकते हैं। इसलिए सही तथा सफल नीति यही हो सकती है कि हम संरचनात्मक एकरूपता और प्रयोगगत वैविध्यता को पाने के लिए क्रमशः आगे बढ़े।